मराठा प्रशासन

1674 में शिवाजी का राज्याभिषेक

वे एक दयालु निरंकुश शासक थे।

उनके मंत्री अष्टप्रधान कहलाते थे।

(i) पेशवा (प्रधानमंत्री) - मुख्य प्रधान (राज्य के सभी मामलों की देखभाल व प्रजा के हित का उत्तरदायित्व)

(ii) अमात्य या मजमुआदार/पंत - आय-व्यय की जाँच कर उन पर हस्ताक्षर करना
वित्त व राजस्व मंत्री (शिवाजी के अमात्य रामचन्द्र पंत थे)

(iii) मंत्री या वाकयानवीश - राजा के दैनिक कार्यों को लिखता था।
राजा को षड्यन्त्र से बचाता था।
वर्तमान के गृहमंत्री के समान था।

(iv) शुरूनवीस या सचिव - राजकीय पत्रों को पढ़कर उनकी भाषा शैली को देखना था तथा परगनों के हिसाब की जाँच।

(v) विदेश मंत्री दबीर या सुमन्त - दूसरे राज्यों एवं देशों सम्बन्धी मामले।

(vi) सर-ए-नौबत या सेनापति - सेना भर्ती, संगठन, अनुशासन

(vii) सदर मुहतसिब या पण्डितराव या दानाध्यक्ष

(viii) न्यायाधीश - सैनिक व असैनिक न्याय करना, भूमि अधिकार, मुखियागीरी आदि मामलों का निस्तारण।

Scanned with CamScanner

केंद्रिय शासन के अतिरिक्त शिवाजी का राज्य चार प्रान्तों में विभाजित था। प्रत्येक प्रान्त एक वायसराय के अधीन था।

- 40 स्थानीय करों से किसानों को मुक्त कर दिया। ✓
- जागीरें देने की प्रथा को अधिकांशतया नहीं माना था। ✓
- पैदावार का 40% कर के रूप में लिया जाता था।

लगान के लिए राज्य को 16 प्रान्तों में बाँटा था।

बनारस के ब्राह्मण गंगाराव ने शिवाजी का राज्याभिषेक करवाया।
छत्रपति की उपाधि प्रदान की।
चौथ व सरदेशमुखी नामक कर।